INTRODUCTION TO PARAD SECRETS

Gaurav Sharma

हर हर महादेव!

दो शब्द

पारद निःसन्देह ईश्वर की तरफ से मानव जाति को वरदान है। इस एकमात्र पदार्थ से न केवल भौतिकता किन्तु आध्यात्मिकता में भी पूर्ण सफलता पाई जा सकती है। इस विष - तुल्य समझे जाने वाले पारे में निःसन्देह ऐसा अमृत छिपा है, जिसमें पूरा जीवन जगभगाया जा सकता है। पारा यानि Mercury शिव - बीज (वीर्य) है जो पूर्ण दिव्य है। परन्तु इसमें उपस्थित विभिन्न अन्य रसायन (लोहा, रांगा आदि) इसे विष बना देते हैं, पर अगर इसका शोधन भली प्रकार से हो तो निःसन्देह वह मानव जाति को वरदान है।

यह पुस्तक लिखने का उद्देश्य इस पारद को अमृत तुल्य बनाने की विधि सरलता से प्रस्तुत करना है। इस प्राचीन एवं रहस्यमयी विधा को पूर्ण प्रमाणिकता एवं सम्पूर्ण सजीव चित्रण कर प्रस्तुत करना इस विधा के अनुयायी पाठकों के लिए एक उपहार है। साथ ही जड़ी - बूटियों का सजीव चित्रण, उनके विभिन्न नाम देने से उनका मिलना आसान कर देता है।

साथ ही यह देखा गया है कि पाठकगण इस विषय पर संक्षिप्त पाठ्य सामग्री उपलब्ध होने से हमेशा भ्रम में घिरे रहते हैं। यह उचित मार्गदर्शन एवं सही कहा जाये तो उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। यही समस्या लेखक को भी रही, जो इस विधा को सीखने के लिए किती ही रसायनशास्त्री, सन्यासी, नागा बाबा आदि से मिला और कई साल बाद सुखद एवं दुःखद परिणामों से जूझता हुआ अंततः सफल हो सका। इन्हीं **पीटाओं** को समझते हुए पहली बार एक ऐतिहासिक फैसला लेते हुए हम इस पुस्तक के साथ एक Video भी दे रहे हैं जिसेस हर चीज Practically पाठकों के समझ में आ जाये। इस Video में सभी संस्कार, पारद निष्कासन, सरल विवरण, प्रत्येक विधि Practically करके दिखाई गयी है। जिससे पाठक पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

इस पुस्तक में पारद - संस्कार (1-8) पूर्ण प्रामाणिकता से दिखाने का प्रयास किया

YASHVRIDDHI

गया है। क्योंकि वस्तुतः 8 संस्कारित पारा ही शुद्ध एवं अमृत तुल्य है। इस अमृत तुल्य पारद के विभिन्न प्रयोग भी पुस्तक में सुशोभित हैं। पारद संस्कार (शुद्धिकरण) पूर्ण करने पर सबका मन उससे निर्मित गुटिकाओं एवं शिवलिंग आदि बनाने पर देता है। इस हेतु हमने पारद शिवलिंग एवं गुटिकाओं को बनाने की कई प्रमाणिक विधियाँ हमने प्रस्तुत की हैं जो लेखक को काफी कठिनता से प्राप्त हुई है।

जिसके बिना इस विषय में पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती, इस पुस्तक में पूर्णता के साथ संलग्न है। साथ ही साथ अगर पाठक विभिन्न संस्कार के प्रयोग देख कर संशय में घिरता है कि किस विधि का प्रयोग करें, उनके लिए एक Ready - To - Use विधि भी दी गई है जिससे यह मात्र उन विधियों पर हू-ब-हू चलकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। यह भी देखने में आया है कि पाठकगण इस संशय में घिरे रहते हैं कि बाजारू पारा का शोधन हो या हिबुल से निकले पारे का, इस चिंता को देखते हुए पहली बार इस पुस्तक में हिंगुलोत्थ पारा एवं बाजारू पारा, दोनों की शोधन विधियाँ दी गई हैं ताकि पाठकगण इस विषय में पूर्ण सफल हो सकें। अंत में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह पुस्तक आप सभी पाठकों को पूर्ण सफलता प्रदान करें एवं आप लोग एक श्रेष्ठ रसायन योगी बन सकें।

धन्यवाद

गौरव शर्मा

पारद एक अति दिव्य रसायन है जो शरीर को वेधन करने से शरीर को अजर - अमर बना देता है और धातु का वेधनकरने पर उसे स्वर्णमय बना देता है। पारद के स्रोत, पूजा-कर्म, साधना-विधान

विषय सूची

1. पारद परिचय -
2. पारद उत्पत्ति -

YASHVRIDDHI

3. पारद महिमा -
4. पारद - दोष -
5. रस सिद्धों के नाम -
6. पारद स्तोत्र -
7. पारद संस्कार -
8. पारद संस्कार - सावधानी

पारद - परिचय

पारद जिसे हम Mercury के नाम से जानते हैं, एक अमूल्य धातु है। वह मानव जाति का वरदान है। सामान्यत: पारद एक विषैला रसायन है जिसके सेवन से व्यक्ति निःसन्देह मृत्यु को प्राप्त होता है। इसलिए पारे का सेवन इसके आठ संस्कार के बाद ही किया जाता है। इन संस्कारों में विभिन्न जड़ी - बूटियों द्वारा स्वेदन, मर्दन आदि क्रियाओं से पारद के दोष दूर किये जाते हैं जिससे वह पूर्ण शुद्ध बन सके। इसी पारद का सेवन अमृत तुल्य है।

पारद - उत्पत्ति

अनुसार पौराणिक कथाओं के अनुसार किसी समय ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त तारकासुर ने तीनों लोकों में अत्यन्त हाहाकार मचाया जिससे समस्त देवी - देवता भयाकुल हो गए। ब्रह्माजी के वरदान के उसकी मृत्यु केवल शिव के पुत्र द्वारा ही हो सकती है।

परन्तु सती के वियोग से शिव जी समाधि में संलग्न थे। कालान्तर बाद शिव और पार्वती जी का विवाह हुआ। तब शिव और पार्वती तारकासुर वध हेतु पुत्र प्राप्ति की इच्छा से संभोग में लिप्त हुए। इस क्रिया को अत्यन्त दीर्घ अवधि देख देवताओं ने संभोग निवारण हेतु अग्निदेव को भेजा।

YASHVRIDDHI

अग्निदेव को कबूतर के रूप में देखकर शिव लज्जा को प्राप्त हुए और संभोग से शांत होकर उन्होंने अपना पतित वीर्य अग्निदेव के मुख में डाल दिया। उस वीर्य के तेज से अग्निदेव गंगा जी में गिर पड़े। गंगा जी से भी उस वीर्य का तेज सहन ना हो सका और उन्होंने उसे पृथ्वी पर डाल दिया। अलग - अलग स्थान पर गिरा वह वीर्य ही पाँच प्रकार का पारद बना।

पारद के पाँच प्रकार -

1. रस - यह अत्यन्त अमृत तुल्य लाल रंग काजरा होता है जो समस्त सिद्धियों का दाता है।
2. यह अजर अमर बनाने वाला एवं समस्त शक्तियों का दाता है
3. सूत यह पारा पीला रंग लिए हुए कुछ रूखा सा होता है। इस पर संस्कार करने से यह सिद्ध होता है
4. पारद यह सफेद रंग का पारा ही आजकल प्राप्त है। इसे आठ संस्कारों से सिद्ध करने पर रोगों का शमन होता है।
5. निश्रक यह नीली सी आभा लिए पूर्ण सिद्ध पारा है। उपयुक्त चार प्रकार के पारे को छोड़ अन्य सभी अप्राप्य हैं बाकी पारद जोकि स्वयं सिद्ध है। उन पर देवताओं और नागलोक का अधिपत्य है सामान्य मानव के लिए प्रायः अत्यन्त दुर्लभ दुष्कर है।

YASHVRIDDHI

रस - महिमा

विभिन्न संस्कार से शुद्ध हुआ पारा मनुष्य को देवतुल्य बनाने में पूर्ण समर्थ है। मूर्छित होने पर वह पूर्ण शरीर का काया कल्प करता है। बुढ़ापे का नाश करता है तथा पूरे शरीर को कामदेव के समान बना देता है, वृद्ध होने पर वह शरीर को वज्र रूप और खेचरत्व प्रदान करता है जिससे मनुष्य आकाश में विचरण करने वाला देवतुल्य बन जाता है, स्वयं मर जाने पर (पारद - भस्म) मनुष्य को अजर - अमर बना देता है अनेक पुरातत्व

ग्रन्थों के अनुसार: -

1. पारद दर्शन करने मात्र से समस्त प्रकार के पापों का नाश होता है। इसके स्पर्श करने मात्र से ब्रह्म हत्या का पाप भी नष्ट हो जाता है।
2. पारद सेवन से समस्त रोगों का नाश होता है। मनुष्य कामदेव के समक्ष हो जाता है।
3. पारद के द्वारा वेधन से किसी भी धातु को स्वर्ण बनाया जा सकता है।
4. पारद से भोग और मोक्ष दोनों ही प्राप्त हो सकते हैं।
5. जो पुण्य संसार के समस्त ज्योतिर्लिंगों के दर्शन से मिलता है उससे भी करोड गुना आठ संस्कार युक्त पारद - शिवलिंग से मिलता है।

पारद के दोष

पारद के पृथ्वी पर आने से एवं उसके दर्शन एवं स्पर्श करने मात्र से मनुष्य देव तुल्य बनने लगे। उन्हें अनायास ही सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। इससे भयाकुल देवता शिवजी के पास पहुँचे और उन्हें अपनी चिन्ता बताई, तब महादेव ने पारे को दोषयुक्त कर दिया। अतः बिना संस्कार किए वह सिद्ध नहीं होता। पारद के 8 दोष प्राकृतिक रूप से उसमें विद्यमान हैं।

1. नागदोष - यह पारद में नाग यानि शीशा (Lead) के अंश विद्यमान रहने से उसमें पाया जाता है। इससे व्रण जैसे घातक रोग उत्पन्न होते हैं।
2. वंगदोष - पारद मैं वंग (Tin) के कण रहने से यह दोष होता है और उससे कुष्ठ रोग उत्पन्न होते है।
3. मलदोष - पारद में नाग 8 वंग के अतिरिक्त भी अन्य धातु क्षीण मात्रा में रहती हैं जिससे मूर्च्छा जैसे रोग उत्पन्न होते हैं।
4. वहिदोष - पारद में उपस्थित सोमल (Arsnic) जैसे विषैले तत्त्वों से उसमें यह दोष उत्पन्न होता है जिससे दाह विकार उत्पन्न होते हैं।

YASHVRIDDHI

5. चंचलता - पारा अत्यधिक चंचल है जो इसका स्वाभाविक गुण है। चपल धातु (Bismuth) से यह दोष उत्पन्न होता है उससे इससे वीर्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न होते हैं।

6. विष दोष - पारद में सम्मिलित विषैले रसायनों से यह दोष होता है और इससे मृत्यु प्राप्त होती है।

7. गिरिदोष -

8. असह्यग्नि - पारद के 357 ° C के ताप से पहले ही उड़ जाने से यह दोष होता है जो फोड़ा स्फोर - जैसे विकार होते हैं।

पारद की विभिन्न गतियाँ

शास्त्रों के अनुसार पारद की पाँच प्रकार की गतियाँ होती हैं। पारद के शोधन, संस्कार आदि कर्म में पारद की अदृश्य यानि मात्रा कम हो जाने को ही पारद की विभिन्न गतिविधि माना है।

1. हंसगति पारद का श्वेत कण में परिवर्तित होकर जल के ऊपर तैरते हुए निकल जाना ही हंसगति है।
2. धूमगति धुंए के रूप में पारद का निकलना ही धूम गति है।
3. मलगति पारद के संस्कार करते समय पारद का दोषों के साथ अल्प मात्रा में निकल जाना 73 उसकी मल गति है।
4. जीवगति अदृश्य रूप (जिसे देखा ना जा सके) में पारद का निकल जाना ही उसकी जीव गति है। जिस प्रकार हम शरीर से आत्मा का निकल जाना नहीं देख सकते , उसी प्रकार यह गति अदृश्य है। उपयुक्त प्रथम चार गतियों को नियंत्रण में लाया जा सकता है परन्त पाँचवी गति को मंत्रबल और साधना के द्वारा ही रोका जा सकता है।

YASHVRIDDHI

इस सिद्धि के नाम

प्राचीन काल से अब तक सैंकड़ों व्यक्तियों ने रस सिद्धि प्राप्त की है, और इस विधा के कई नए आयाम स्थापित किए हैं। निम्नांकित 27 रस सिद्धि इस क्षेत्र में अद्वितीय हैं और उन्होंने इस क्षेत्र में अत्यधिक ऊंचाई प्राप्त की है। यह सभी रस सिद्धि आज भी हासिल सशरीर जीवित है, रस सेवन से यह सभी अमर पद हासिल कर चुके हैं। रस कार्य में युक्त सभी साधकों को इन सभी रससिद्धि का नाम स्मरण कर इनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए ।

1 . आदिम - ॐ आदिमाय नमः

2. चंदूसेन - ॐ चन्दूसेनाय नमः

3. लंकेश (रावण) - ॐ लंकेशाय नमः

4. विशारद - ॐ विशरदाय नमः

5. कापाली - ॐ कापालिकाय नमः

6. भत्तदेन - ॐ पत्तदेवाय नमः

7. भाण्डव्य - ॐ माण्डव्याय नमः

8. भास्कर - ॐ भास्कराय नमः

9. शूरसेन - ॐ शूरसेनाय नमः

10. रत्नकोश - ॐ रत्नकोषाय नमः

YASHVRIDDHI

11. शम्भू - ॐ शाम्भवे नमः

12. सात्विक - ॐ सातिवकाय नमः

13. रत्नवाहक - ॐ रत्नवाहनाय नमः

14. इंद्रदाग - ॐ ईन्द्रगाय नमः,

15 गोमुख - ॐ गोमुखय नमः

16. काम्बिल - ॐ कबलाये नमः

17. व्याही - ॐ व्यालवे नमः

18. नागार्जुन - ॐ नागार्जुनाय नमः

19. सूरानन्द - ॐ सूरानन्दाय नमः

20. नागबीधि - ॐ नागबिधिये नमः

21. पशोधन - ॐ पशोधनाय नमः

22. खण्ड - ॐ खण्डाय नमः

23. कामालिक - ॐ कामालिकाय नमः

24. ब्रह्मा - ॐ ब्रह्मणे नमः

25. गोविन्द - ॐ गोविन्दाय नमः

26. लम्पक - ॐ लम्पकाय नमः

27. हरि - ॐ हरये नमः

YASHVRIDDHI

पारद स्तोत्र

ददासि त्वं रसेन्द्राशु शब्द स्पर्शेन धूमतः ।

स्वर्णमर्बुद काटयन्त त्रहि खेचरत्वः ।

नमस्ते महाकालाय नमस्ते सर्वगुणरूपाय वली

पलितनाशय बल बुद्धि वीर्य प्रदायिने

नमश्शस्त्रास्त्र हन्त्रे च मायाम्भी - निविपारद

पारेन्द्र नमस्तुभ्यं कामिनिकेलिमन्महो ।

सुधारूप नि वास पित कफ त्रिदोषघ्न-नमस्ते षड्सात्मने ।।

हे रसेन्द्र : तुम कोटि स्वरूप प्रदान करने में समर्थ हो चाहे वो शब्द, स्पर्श, धूम, स्वरूपं या स्वर्ण हो । तुम समस्त निधियों को कोटिस्वरूप देने में समर्थ हो ।

तुम ही बद्ध होकर खेचर आदि सिद्धि देने में समर्थ हो । हे महाकाल आप सभी गुणों से युक्त हो, आपको नमस्कार है ।

आप ही जटा - व्याधि, बुढ़ापा को नष्ट करने में सक्षम हो, समस्त शस्त्र अशस्त्री को हनन करने में सक्षम हों, आपको नमस्कार है । हे रसेन्द्र आप ही काम - शक्ति प्रदान करने वाले हो, आप ही अमृत स्वरूप होकर वात - पित्त - कफ आदि त्रिदोषों को नष्ट करने में सक्षम हो । आपको बारम्बार नमस्कार है ।

फल : - इस पारद - स्तोत्र का तीनों सन्ध्याओं में जो पाठ करता है, वह असंख्य पापों से मुक्त होकर ब्रह्मपद को प्राप्त करता है । इसके पठन से समस्त कार के पाप एवं कष्टों से मुक्ति प्राप्त होती है । इसके पाठ करने से साधक पारद की सिद्धि शीघ्र प्राप्त करता है । किसी भी विपत्ति में इसका पाठ करने से तुरन्त छुटकारा मिल जाता है

YASHVRIDDHI

पारद संस्कार

पारद के दोषों को निकालने एवं स्पतकुंचकों को हटाने के लिए पारद का शोधन अनिवार्य है। प्रमुख रूप से पारद के 18 संस्कार होते हैं जिसमें प्रारम्भिक 8 रस - रसायन प्रयोग के लिए एवं अन्य देह एवं लौह सिद्धि के लिए हैं।

पारद संस्कार

1. स्वेदन संस्कार - आन्तरिक दोषों की शुद्धि
2. मर्दन संस्कार - बाहरी दोषों की शुद्धि
3. मूर्छन संस्कार - वंग एवं नाग दोषों का शमन
4. उत्थापन संस्कार - पारद को पूर्णत : शुद्ध करना एवं उसे मूर्छन आदि संस्कारों से आई शिथिलता को दूर करना।
5. पातन संस्कार - पूर्णतः शुद्ध एवं सप्तकुंचकी दोषों से मुक्ति
6. रोधन संस्कार - पारद को वीर्यवान बनाना
7. नियमन संस्कार - चपलता का नाश करना
8. दोपन संस्कार - पारद को बुभुक्षित करना
9. गगनग्रास - पारद को योग्य एवं शुद्ध ग्राम मात्रा निर्धारण करना
10. पारद को ग्रास देना
11. चारण संस्कार - ग्रास दिए हुए धातु को पारद में पचाना
12. ब्रह्मदुति संस्कार - ग्रसित धातु (अभ्रक, स्वर्ण आदि) बाहर ही द्रवित करना
13. जारण संस्कार - गंधक का पारद में जागरण करना
14. रंजन संस्कार - पारद को धातु जारण कर रंजित करना (पीत वर्ण करना)

YASHVRIDDHI

15. सारण संस्कार - पारद को वेधक बनाना

16. कामण संस्कार - पारद को दूसरी धातु (लौह, मान आदि) में प्रवेश योग्य बनाना

17. वेधाक संस्कार - पारद को वेधक शक्ति (शतवेधी सहस्त्रवेधी आदि) सम्पन्न बनाना

18. भक्षण संस्कार:- पारद को देह - सिद्धि के योग्य बनाना

उपर्युक्त सभी संस्कारों को करने के लिए विभिन्न प्रकार के द्रव, औषधियों, यंत्र, खरल आदि I इस्तेमाल किए जाते हैं जिनसे पारद को योग्य बनाया जाए। इन सभी उपकरणों का पूर्ण विवरण पारासंस्कारों के साथ किया जाएगा। अभी सिर्फ खरल के विषय में देखें: -

पारद के लिए विभिन्न संस्कारों में विभिन्न प्रकार की खरल प्रयोग की जाती है।

1. लौह खरल - लोहे की खरल जिसमें पारद को तप्त रखते हुए खरल किया जा सके।
2. मातिया खरल - मोतिया पत्थर से बनी खरल पर इसमें भी पारद पूर्ण शुद्ध नहीं हो सकता।
3. चीनी मिट्टी खरल - चीनी मिट्टी भी खरल भी पूर्ण उपयुक्त नहीं मानी जाती क्योंकि पारद खरल से पारद में इसका सत्व मिलता है जो उसे दोषपूर्ण बनाता है।
4. तामरी खरल - पारद संस्कारों के लिए सबसे उत्तम खरल तामरी पत्थर की ही मानी जाती है। पारद संस्कार करते वक्त सावधानियाँ पारद पृथ्वी पर बहुत ही अशुद्ध रूप में प्राप्त होता है। पारद में सामान्य रूप में मिले हुए लौह, वंग, शीशा आदि उसे अत्यन्त हानिकारक पदार्थ बड़े हैं। पारद निगल जाने से व्यक्ति की शीघ्र ही मृत्यु होती है। पारद संस्कार करते वक्त विविध प्रक्रियाओं जैसे स्वेदन, मर्दन आदि से अत्यन्त विषैला धुआँ निकलता है। जिससे आँखों का अंधा होना श्वास रोग, बाल झड़ना आदि रोग हो जाते हैं। इसलिए पारद संस्कार करते वक्त अत्यन्त

YASHVRIDDHI

सावधानी बरतनी चाहिए।

1. चश्मा (Safety Goggles) यह चश्मा आसानी से Chemist की दुकान व Science Laboratory / Chemical में आसानी से मिल जाता है। इससे आँखों को पूर्ण सुरक्षा प्राप्त होती है।
2. Mask यह Mask Chemist Shop से आसानी से मिल जाता है। पर हमें सस्ता Mask जोकि 5 -10 रू में आता है उसे न लेकर अच्छी कम्पनी का Mask लेना चाहिए जोकि 100 रु तक आ जाता है। अच्छी quality का Mask आपको विषैले धुंए से सुरक्षा प्रदान करता है।
3. Hair Cap Hair cap आसानी से किसी भी Cosmetic Cap से मिल जाती है। इसका प्रयोग बालों को रंगने के बाद उसे ढकने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग विषैले धुंए का बालों में प्रवेश होने से रोकता है
4. दस्ताने (Doctor Gloves)

पारद का चयन

पारद संस्कार के लिए कैसा पारा लिया जाए, यह प्रश्न सभी पारद विधा में लगे साधकों का होता है। इसका उत्तर तकरीबन सभी ग्रन्थों में मिलता है कि पारे के संस्कार के लिए हिंगुल से पारे का निष्कासन करना चाहिए। हिंगुल से प्राप्त अंतर्भूम प्रक्रिया से निकला पारा अत्यन्त शुद्ध होता है। बाजारी पारे में मुनाफा वसूली के लिए लौह, वंग आदि पदार्थ ज्यादा होते हैं जिससे उसे शुद्ध करना आसान नहीं होता।

इसलिए अगर किसी कारणवश हिंगुल से निकला पारा उपलब्ध ना हो सके तो Laboratory का बना पारा इस्तेमाल करना चाहिए, यह पारा किसी भी Chemical shop से मिल जाता है। इससे भी एक अच्छी कम्पनी का पारा इस्तेमाल करना चाहिए Ranbaxy, Rankem आदि कम्पनियों का पारा पारद संस्कार के लिए उत्तम है।

YASHVRIDDHI

हिंगुल से पारद निष्कासन

हिंगुल को सर्वप्रथम नींबू के रस से 4 घण्टे तक मर्दन करना चाहिए। सिन्दूरी रंग का, हिंगुल (Mercury Sulphate) उत्तम माना गया है। मर्दन करने के पश्चात हिंगल को सखने के लिए छोडदेना चाहिए। सूखने के पश्चात् इसको डमरू यन्त्र से पातन कर पारा ग्रहण करना चाहिए। डमरू यंत्र के लिए दो मटके चौड़ी मुंह वाले लेने चाहिए जिससे वे एक दूसरे के ऊपर आ सकें।

सर्वप्रथम उनके मुंह को किसी पत्थर पर घिस लेना चाहिए जिससे वह एक दूसरे के ऊपर सपारता से आ जायें। नीचे के मटके में हिंगुल को रखना चाहिए। इन दोनों मटकों के मुंह को कपडमिट्टी करके जोड़ देना चाहिए। कपड़मिट्टी के लिए 1-2 मीटर कपड़ा मुलतानी मिट्टी (भीगी हुई) में अच्छी तरह लपेट कर सक के चारों ओर लगानी चाहिए और उसे सूखने के लिए रख देना चाहिए।

2-3 कपड़मिट्टी हिंगुल से पारद निष्कासन के लिए देनी चाहिए। कई बार देखा गया है कि अत्यधिक ताप से सन्धि में दरार पड़ जाती है और वो चटक जाती है जिससे कुछ पारा वहाँ से उड़ जाता है। इससे बचने के लिए मुलतानी मिट्टी में रूई डालकर प्रयोग करनी चाहिए ताप देने के लिए लकड़ियों का प्रयोग करना चाहिए। लगभग 3-4 घण्टे तीव्र ताप देने से पारा का पातन हो जाता है। ताप देते समय ऊपर वाले मटके में गीला कपड़ा रखना चाहिए और हर 2-3 मिनट में वह ठण्डे पानी से तर कर बदलते रहना चाहिए।

अगर किन्हीं कारणों से लकड़ी का उपयोग संभव न हो तो हलवाई वाला बड़ा चूल्हा भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इस क्रिया में विषैला धुंआ निकलता है। अतः हाथ, आँख और सर ढक कर रखना चाहिए। 2-3 घण्टे ताप देने के पश्चात् उसको ठण्डा होने के लिए रख देना चाहिए और बाद में ध्यान से सन्धि को तोड़ना चाहिए। इसमें यह ध्यान देना जरूरी है कि नीचे की हाण्डी की सामग्री ऊपर की मटकी में ना आए। फिर एक साफ कपड़े से ऊपर की हाण्डी में लगे पारे को सावधानीपूर्वक निकालना चाहिए।

यह हिंगुलोत्थ पारा पारद संस्कार के लिए उत्तम माना गया है।

YASHVRIDDHI

प्रारम्भिक शुद्धि

संस्कारों में जाने से पहले पारे की प्रारम्भिक शुद्धि अवश्य कर लेनी चाहिए। हिंगुलोत्थ पारे को हम सीधे ही संस्कारों के लिए ले रहे हैं तो उसकी प्रारम्भिक शुद्धि अति आवश्यक है।

1. पारे का 8 घण्टे एक पोथिया लहसुन के रस में खरल करने से उसकी प्रारम्भिक शुद्धि हो जाती है और वो संस्कार करने के लिए उपयुक्त हो जाता है
2. ग्यारपाथा, हल्दी और त्रिफला में यदि पारे को 8 Hrs . खरल करें तो उसकी प्रारम्भिक शुद्धि हो जाती है।

1. **प्रथम संस्कार स्वेदन**

1. पारद को प्रथम 3 घण्टे दौला यन्त्र में नींबू के रस से स्वेदित करें , 3 घण्टे सैंधा नमक / अदरक के रस में / अन्त में 3 घण्टे मूली के रस में स्वेदित करने से पारद का स्वेदन संस्कार पूर्ण होता है।
2. हल्दी , चित्रक , त्रिफला , पुर्नवा में (सभी पारे से 16 वां भाग) में 16 घण्टे स्वेदित करने से स्वेदन संस्कार होता है। ● 3 . पाँचों नमक , जवाखार , सज्जीरवार , सौंठ , लाल मिर्च एवं नींबू के रस में पारद को 24 घण्टे स्वेदन करें। पाँचों नमक - सेन्धा नमक , समुद्री नमक , नवसार , काच नमक , रेह नमक

2. मर्दन संस्कार

1 . सेन्धा नमक , हल्दी , त्रिफला , ईंट का चूर्ण , नींबू रस में पारे को 24 घण्टे तक तप्त स्कूल में मर्दन संस्कार पूर्ण होता है

2. सञ्जीरवार , जवारवार , पाँचों नमक , सुहागा , नींबू रस में 24 घण्टे खरल करने से पारे का मर्दन , संस्कार होता है

YASHVRIDDHI

3. मूर्छन संस्कार

1. अमलतास के रस में 3 घण्टे मर्दन और फिर ग्वारपाठे में 3 घण्टे मर्दन करने से पारे का मूर्छन संस्कार सम्पन्न होता है।

2 . त्रिफला , ग्वारपाठा , सैंधा नमक में पारे को 24 घण्टे मर्दन तप्त खरल में करना चाहिए।

3.पाँचों नमक , सज्जीखार , जवारवार , चित्रक , कटेरी की जड़ में पारे का मर्दन संस्कार सफल होता है

4. उत्थापन संस्कार

1 . पारे का उत्थापन संस्कार नींबू रस में स्वेदित करने से पूर्ण होता है (अवधि 48 Hrs .)

2. सुहागा , काँजी , सैंधा नमक में पारे को 3 बार स्वेदन करना चाहिए। (अवधि 24 Hrs.)

3. पारद को 48 Hrs . काँजी एवं नींबू रस में स्वेदित करने से पारद का उत्थापन संस्कार पूर्ण होता

5. पातन संस्कार

1. पातन संस्कार पारे को गन्धक के साथ मर्दन के साथ मर्दन करने 2 नींबू रस मिला तप्त खरल में मर्दन करने से पातन संस्कार पूर्ण होता है।

सर्वप्रथम पारे गन्धक की कजली बना लेनी चाहिए फिर तप्त खरल में नींबू रस मिलाकर मर्दन करना चाहिए। यह मर्दन तब तक करना चाहिए जब तक सारा गन्धक हवा में न जाये। हिंगुल से निकले पारे में / बार एवं लेबोरेटरी पारे में 2 बार यह प्रक्रिया दोहरानी चाहिए। इसमें गन्धक शुद्ध कर लेना चाहिए

6. शोधन संस्कार

YASHVRIDDHI

1.पारद को सैंधा नमक के साथ घोलकर एक हाण्डी में बन्द कर पृथ्वी में तीन दिन तक दबाकर रखने से पारद का रोधन संस्कार होता है।

पारद = 300 gm

7. नियमन संस्कार

1 . भांगरा , नागरमोठ , सोंठ , पाँचों नमक , धतूरा , नींबू रस में पारद को 24 घण्टे खरल करन से पारद का नियामन संस्कार होता है।

औषधि अनुपात - 16 वां भाग

2 . लहसुन , भांगरा , नागरमोथा , इमली , पाँचों नमक में पारे को 48 घण्टे स्वेदन करने से नियमन संस्कार होता है।

3. पुनर्नवा रस , इमली रस , धतूरा रस , आक दूध , अदूसा , चौलाई , मकोय , गिलोय , सैंधा नमक , शतावर , काली तुलसी , अपराजिता , शंखपुखा , इनमें से किन्हीं भी 4 औषधियों के स्वरस में 6-6 घण्टे स्वेदन करने से भी नियमन संस्कार पूर्ण होता है।

8. दीपन संस्कार

1 . फिटकरी : पाँचों नमक , राई , सुहागा में तप्त खरल में पारद को 24 घण्टे मर्दन करने से दीपन संस्कार सम्पन्न होता है।

2 . जम्भीरी नींबू के रस में पारद को मन्द आँच में पकाने से पारद पूर्णत : बुभुक्षित होता है। हीरा कशीश , काली मिर्च , सुहागा , फिटकरी , चित्रक , राई , काँजी , इन सबके रस में पारे को स्वेदित 43 घण्टे करने से दीपन होता है।

रसायनों के विभिन्न नाम

YASHVRIDDHI

English Namo		Chemical Name
(1) सज्जी खार	=	Sodium Salts Sodium Salt
(2) सँधा नमक	=	Rock Salt
(3) नीला थोथा	=	Sulphate of Copper Copper Sulphate
(4) सुहागा	=	Borax Borax
(5) नौसादर	=	Chloride of Ammonia
(6) हरताल	=	White Oxide of Arsenic
(7) हीरा कशीश	=	Green Vitriol
(8) कल्मी शोरा	=	Alum
(9) फिटकरी	=	Alum
(10) काला नमक	=	Black Salt
(11) चूना	=	Calcium Cabonate
(12) हिंगुल	=	Cinnabar Mercury Sulphide
(13) गेरू	=	Red Oxide
(14) गन्धक	=	Sulphur

YASHVRIDDHI

अष्ट संस्कार फलम्

प्रथम आठ संस्कारों से पारे के समस्त दोष समाप्त हो जाते हैं पारा अत्यधिक शुद्ध , निर्मल और तेजस्वी होकर महाशक्तिमान बन जाता है । इन संस्कारों को करने वाला भी अष्ट संस्कार के बाद शुद्ध , निर्मल और तेजस्वी बन जाता है । पारे के अष्ट दोषों को समाप्त करने से साधक को अत्यन्त पुण्य प्राप्त होता है । यह पूर्णत : शुद्ध और सभी पापों से मुक्त हो जाता है । पारद साधना में साधक का जितना खर्च बैठता है , उससे कोटि गुणा धन उसे भैरव जी प्रदान करते हैं ।

यह शास्त्र वचन कभी असत्य नहीं होता । जितने दिन पारद को साधक अग्नि क्रिया में रखता है उतने ही सहस्रों युगों तक वह कैलाश में विराजमान रहता है । पारद भक्षण करने वाले साधक को तीनों प्रकार के पापों से मुक्ति प्राप्त होती है और वह परम पद प्राप्त करता है । जो मनुष्य पारद मुक्त औषधियाँ रोगी को देता है निरन्तर असंख्य खुला दान एवं यज्ञों का फल प्राप्त करता है । रस भक्षण से मनुष्य वज्र शरीर प्राप्त करता है जिसे किसी भी ऋतु , वायु अग्नि आदि का प्रभाव नहीं पड़ता । थोड़े ही समय में वह कैवल्य पद प्राप्त कर लेता है ।

उसे परब्रह्म का साक्षात्कार शीघ्र हो जाता है । असाध्य से असाध्य रोग पारद के सेवन से दूर होते हैं । इसलिए रस वैद्य की प्रशंसा एवं पद सामान्य वैद्यों से कहीं गुणा ऊपर होता है । जैसे - जैसे व्यक्ति पारद को खरल एवं अग्नि क्रिया करता जाता है उसके साथ - साथ ही उसकी आन्तरिक वर्तुल क्रिया आरम्भ हो जाती है जिससे वह इस पारद पद को प्राप्त कर जाता है । शिव का यह बीज मानव जाति के लिए वरदान है और यह विधा परम गोपनीय है । इस विधा को केवल सुयोग्य साधकों को ही देनी चाहिए ।

अष्ट संस्कारित पारद के उपयोग

अष्ट संस्कारित पारा समस्त दोषों से मुक्त होकर अत्यन्त तेजस्वी एवं बुभुक्षित हो जाता है । इसी पारा को आगे के संस्कार करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है । इसेंडयारे का शिव

YASHVRIDDHI

लिंग एवं विभिन्न गुटिकाएं भी बनाई जाती हैं जो आगे के पृष्ठों में कही जाएगी । इसके अलावा यह निम्न कार्यों में भी काम आता है

इस पारे को अगर नहाने के पानी में 32 मिनट डुबा कर , फिर उस पानी से स्नान किया जाए तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक सुन्दर होता है ।

अगर अष्ट संस्कारित पारे को पानी में 3 निमट डुबाकर फिर बाहर निकाल कर उस जल का सेवन किया जाए तो उसके समस्त विकार दूर होते हैं । असाध्य रोग भी इससे समाप्त हो जाते हैं

।. यह पारद जल को गुप्त अंगों में मलने से नपुंसकता दोष समाप्त होता है । इस पारद मिश्रित जल को शरीर पर मलने से समस्त त्वचा रोग दूर हो जाते है । यह पारद जिस घर में विराजमान होता है वहाँ पर किसी भी प्रकार का तंत्र मंत्र नहीं हो सकता । यह पारद स्त्रियों के समस्त विकार दूर करता है । इस पारद गुटिका को अगर व्यक्ति धारण करता है वह समस्त दोषों से मुक्त होता है और समस्त रोग उसके समाप्त हो जाते हैं

इस प्रकार की गुटिका अगर स्त्री अपनी कमर पर धारण करें तो वह शीघ्र ही उत्तम संतान की उत्पत्ति करती है । बच्चों के गले में यह गुटिका धारण करने से वह पूर्ण स्वस्थ रहते हैं ।

इस प्रकार की गुटिका साधक में अत्यन्त वशीकरण शक्ति प्रकट करती है । ।

पारद - शिवलिंग –

पारद शिवलिंग के बारे में सभी ने काफी सुन रखा है । पारद शिवलिंग एक अत्यधिक दुर्लभ विग्रह और वास्तव में जिनका भाग्य उदय हुआ हो , उन्हीं को यह प्राप्त होता है । बाजर में बहुत से पारद शिवलिंग मिलते हैं लेकिन क्या यह वास्तव में अष्ट संस्कारित शिवलिंग है ? इसका उत्तर सभी को ज्ञात होता है कि अष्ट - संस्कारित शिवलिंग की प्रक्रिया अत्यन्त श्रम - साध्य कर्म है । कई दिन की मेहनत के पश्चात् ऐसा विग्रह बनता है । बाजार में जितने भी शिवलिंग मिलते हैं उसे रांगा (Tin) अथवा जस्ता (Zinc) आदि के

YASHVRIDDHI

साथ मिलाकर बनाया जाता है जो पूर्णत : अशुद्ध है और उनका कोई प्रभाव प्राप्त नहीं होता । पारद शिवलिंग शुद्ध की पहचान यह है कि अर आप उस पर यदि सोने का टुकड़ा रखोगे तो वह तुरन्त उसे खा जाएगा और उसका वजन भी बराबर रहेगा ऐसा शिवलिंग अपने से कई गुणा स्वर्ण खा सकता है । जब ऐसे शिवलिंग पर कई किलों स्वर्ण खिलाने के बाद वह स्वर्ण खाना बंद कर दे तो वह पारस में परिवर्तित हो जाता है । पारद शिवलिंग अत्यन्त सौभाग्यवर्धक एवं शक्ति का साधन है ।

जिसके घर में आष्ट संस्कारित पारद शिवलिंग स्थापित होता है वह भगवान शिव की पूर्ण कृपा प्राप्त करता है । उसकी भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छाएं पूर्ण होती हैं । पारद शिवलिंग के दर्शन मात्र से ब्रह्म हत्या का पाप दूर हो जाता है । इसके छूने मात्र से पिछले जन्मों के पाप ताप भस्म हो जाते हैं एवं इसमें जल चढ़ाकर पीने से वह समस्त सिद्धियों को प्राप्त करता है । उसे अत्यन्त उच्च ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है । पारद शिवलिंग को घर के (N - E- North East) दिशा में शुभ मुहूर्त में स्थापित करना चाहिए ।

पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग मानव जाति के लिए वरदान है । समस्त ज्योतिर्लिंगों के दर्शन एवं स्पर्श का जोफल मिलता है वह सिर्फ पारद शिवलिंग के दर्शन से प्राप्त हो जाता है । गोहत्या , श्राप मुक्ति एवं ब्रह्म हत्या जैसे महापाप भी मात्र पारद शिवलिंग के दर्शन एवं स्पर्श से दूर हो जाते हैं । पारद शिवलिंग सम्पूर्ण मनोकामनाओं की पूर्ति करता है । पारद शिवलिंग पर साधना करने से उसका फल कई गुना बढ़ जाता

पारद गुटिकाएँ

पारद अष्टसंस्कारित गुटिका -

इस गुटिका को धारण का यह फल है कि यह मानव में सम्मोहन , वशीकरण की शक्ति के साथ सम्पूर्ण आरोग्यता प्रदान करती है । यह गुटिका सम्पूर्ण तंत्र प्रयोगों से रक्षा करती है एवं इच्छाओं की पूर्ति करती है ।

शक्ति गुटिका :

YASHVRIDDHI

यह गुटिका पारद के अष्ट संस्कार करने के पश्चात 6 गुना गन्धक जारण कर विभिन्न प्रकार के दिव्य तेलों में पकाई जाती है जिससे इसकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है। यह गुटिका सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास एवं सौभाग्य की वृद्धि करती है

नवग्रह गुटिका :

इस गुटिका में पारद को नवग्रह भस्मों का जारण करा लिया जाता है जिससे कि यह गुटिका अत्यन्त शक्तिशाली हो जाती है। इस गुटिका में मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, विक्रांत, नीलम, माणिक्य, गोमेद एवं लहसुनिया भस्मों का निर्माण पारद में जारित किया जाता है। यह गुटिका सम्पूर्ण नवग्रहों का दोष दूर कर देती है। इससे धारण मात्र से नवग्रह आबद्ध हो जाते हैं।

पारद शिवलिंग स्थापना : -

पारद शिवलिंग को किसी तांबे के पात्र में स्थापित करें। मानसिक ' ॐ नमः शिवाय ' का जप चालू रखें। फिर निम्न स्तोत्र का पाठ करें। शिवाय नमः शिवलिंगाय नमः भवाय नमः भवलिंगाय नमः शर्वाय नमः सर्वलिंगाय नमः बलाय नमः बलप्रथनाय नमः इत्यादि एव अपीरेभ्यो अथा भोरेभ्यो भोरमारतरेभ्यः।

सर्वेभ्य : सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्योः।

(1) रुद्राभिषेक

पारद शिवलिंग पर सर्वप्रथम की जाने वाली साधनाओं में रुद्राभिषेक सर्वोपरि है। रुद्राभिषेक से तात्पर्य है कि भगवान शिव को पंचामृत स्नान कराकर उनकी कृपा प्राप्त की जाये।

सर्वप्रथम पारद शिवलिंग स्थापित करा जाए जो पीछे स्पष्ट किया जा चुका है फिर पारद शिवलिंग पर जल चढ़ाएँ। जल से स्नान कराए। दूध से शिवलिंग को स्नान कराए

दही से शिवलिंग को स्नान कराए, घृत से शिवलिंग को स्नान कराए, मधु से शिवलिंग को स्नान कराए शर्करा से शिवलिंग को स्नान कराए - शुद्ध जल से शिवलिंग को स्नान कराए

YASHVRIDDHI

प्रसाद चढ़ाए। धूप - दीप दिखाएँ फिर अक्षत (बिना टूटा हुआ चावल) और पुष्प शिवलिंग पर चढ़ाएँ । फिर शिवलिंग पर कच्चा दूध व पानी मिलाकर आधे घण्टे तक निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएँ । ।। ॐ नमः शिवायः ॥

(2) गृहस्थ- सुख प्राप्ति, इच्छित वर - वधु की प्राप्ति, शीघ्र विवाह हेतु साधना J आज के युग में गृहस्थ जीवन एक चुनौती बन गया है । तरह - तरह के क्लेश, घर में अशांति आदि से वैवाहिक जीवन विष तुल्य हो गया है । ऐसी स्थिति में यह भगवान शिव - पार्वती संयुक्त साधना से वैवाहिक जीवन माधुर्य और प्रेम से भर जाता है ।

इस साधना को मनचाही कन्या या पुरुष को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है । अगर किसी कन्या के विवाह में रूकावट हो तो वह भी शीघ्र दूर होकर बहुत जल्द उसका विवाह सम्पन्न होता है ।

इस साधना के लिए सर्वप्रथम पारद शिवलिंग स्थापित करें फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की 5 माला जप सोमवार से शुरू करके तीन दिन तक नित्य प्रातःकाल करें ।

ॐ ह्रीं ह्रौ नमः शिवायः ।।

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

ऊर्वारुकमिव बन्धनामृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

<u>रावण कृत शिव ताण्डव स्तोत्रम्</u>

शिव तांडव स्तोत्र भगवान् शिव को अत्यंत प्रिय है । इसके जप से शिवजी प्रसन्न होकर साधक के सभी मनोरथ पूर्ण करते है । 108 जप से मनोकामना पूर्ती होती है । इसका जप अर्थ के साथ करने से साधक को समस्त प्रकार के फल प्राप्त होते है ।

जटाटवी गलज्जत प्रवाह पावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्ग तुङ्ग मालिकाम्

डमड्डुमड्डुमड्डुम - त्रिनादव - डुमर्वयं चकार चण्ड्ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् १ .

जिन शिव जी की सघन जटारूप वन से प्रवाहित हो गंगा जी की धाराय उनके कंठ को

YASHVRIDDHI

प्रचालित क होती हैं , जिनके गले में बड़े एवं लम्बे सर्पों की मालाएं लटक रही है , तथा जो शिव जी डम डम डमरू बजा कर प्रचण्ड ताण्डव करते हैं , वे शिवजी हमारा कल्पान करें

जटा - कटा - ह - ममत्रि - तिम्प निर्झरी - विलोलवी- चिवत्तरी - विराजमान - पूर्वनि

धगद्धगद्धग - ज्वल - त्ललाट पट्ट पावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम २ .

जिन शिव जी के जटाओं में अतिवेग से विलास पूर्वक भ्रमण कर रही देवी गंगा की लहरे उनके शिश पर तहरा रही है , जिनके मस्तक पर अग्नि की प्रचण्ड ज्वालायें धधक - धधक करके प्रज्वलित हो रही है , उन बाल चंद्रमा से विभूषित शिवजी में मेरा अंनुराग प्रतिक्षण बढता रहे ।

धरा धरेन्द्र नंदिनीविलास बन्धु - बन्धुर स्फुर - दिगन्त सन्ततिप्रमोद - मान - मानसे

कृपा - कटाक्ष - धोरणी - निरुद्ध दुर्धरापदि कचि - दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ३ .

जो पर्वतराजसुता (पार्वती जी केअ विलासमय रमणिय कटाक्षों में परम आनन्दित चित्त रहते हैं , जिनके मस्तक में सम्पूर्ण सृष्टि एवं प्राणीगण वास करते हैं , तथा जिनके कृपादृष्टि मात्र से भक्तों की समस्त विपत्तियां दूर हो जाती है , ऐसे दिगम्बर (आकाश को वस्त्र सामान धारण करने वाले शिवजी की आराधना से मेरा चित्त सर्वदा आन्दित रहे ।

जटा - भुजङ्ग पिङ्गत - स्फुरत्फणामणिप्रभा कदम्ब कुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्व धूमुखे

मदान्ध - सिन्धुरस्फुरत्व गुत्तरीयमे दुरे मनो विनोदमदभुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ४

में उन शिवजी की भक्ति में आन्दित रहूँ जो सभी प्राणियों की के आधार एवं रक्षक हैं , जिनके जाटाओं में लिपटे सर्पों के फण की मणियों के प्रकाश पीले वर्ण प्रभा - समुहरूपकेसर के कार्ति से दिशाओं को प्रकाशित करते हैं और जो गजचर्म से विभुषित हैं

सहसलाचनप्रभृत्य (प्रसून तारणावपूसरापाठ भुजङ्गराजमालया निबद्ध जाटजूटक श्रियै

YASHVRIDDHI

चिराय जायतां चकोर बन्धुशेखरः

जिन शिव जी का चरण इन्द्र विष्णु आदि देवताओं के मस्तक के पुष्पों के धूल से रंजित हैं (जिन्हें देवतागण अपने सर के पुष्प अर्पन करते हैं , जिनकी जटा पर ताल सर्प विराजमान है , वो चन्द्रशेखर हमें चिरकाल के लिए सम्पदा दे ।

तलाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीत पत्र - सायक - नमत्रि - तिम्प नायकम् सुधा मयूख - लेखया विराजमानशेखरं महाकपाति - सम्पदे शिरो - जटाल - मस्तुन जिन शिव जी ने इन्द्रादि देवताओं का गर्व दहन करते हुए कामदेव को अपने विशाल मस्तक की अभि ज्याला से भस्म कर दिया , तथा जो सभि देवों द्वारा पुज्य है , तथा चन्द्रमा और गंगा द्वारा सुशोभित है , वे मुझे सिद्धी प्रदान करें । कराल - भात - पट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल द्धनञ्जयाहुतीकृत - प्रचण्ठपई - सायके धरा धरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्रचित्र पत्रक - प्रकल्प नैकशिल्पिनि त्रिलोचने- रतिर्मम ७ जिनके मस्तक से धक धक करती प्रचण्ड ज्वाला ने कामदेव को भस्म कर दिया तथा जो शिव पार्वती जी के स्तन के अग्र भाग पर चित्रकारी करने में अति चतुर है । यहाँ पार्वती प्रकृति है , तथा चित्रकारी सृजन है . उन शिव जी में मेरी प्रीति अटत हो

नवीन - मे - मण्डी - निरुद्धदुर्धर - कुहू - निशी - पिनी - तम प्रबंध - 4 - कप निलिम्प निर्झरी - धरसा - मोतु कृति - सिन्धुरु कता - निधान बन्धुरः श्रियं जगदपुरंधर ... जिनका कण्ठ नवीन मेघों की घटाओं से परिपूर्ण आमवस्या की रात्रि के सामान काता है , जो कि गज - धर्म , गंगा एवं बाल चन्द्र द्वारा शोभायमान हैं तथा जो कि जगत का बोझ धारण करने वाले हैं , वे शिवजी हमे सभि प्रकार की सम्पनता प्रदान करें । प्रफुल्ल नीलपङ्कज प्रपञ्च कालिमप्रभावलम्बि कण्ठकन्दली रुचिप्रबद्ध कन्धरम् स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदांधकछिदं तमंतक - विद भजे ९ . जिनका कण्ठ और कन्था पूर्ण खिते हुए नीलकमल की फैली हुई सुन्दर श्याम प्रभा से विभूषित है , जो कामदेव और त्रिपुरासुर के विनाशक , संसार के दुखो के काटने वाले , दक्षयज्ञ विनाशक

YASHVRIDDHI

गजासुर एवं अन्धकासुर के संहारक है तथा जो मृत्यू को वश में करने वाले हैं , मैं उन शिव जी को भजता हूँ अखर्वसर्वमङ्गताकता - कदंबमन्जरी रस - प्रवाह - माधुरी विभणा मधुव्रतम् सारान्तक पुरान्तक भवान्तक मसान्तक गजान्त - काय - कान्तक तमन्तकातक भजे . १० .. जो कल्पानमय , अविनाशि , समस्त कताओं के रस का अस्वादन करने वाले हैं , जो कामदेव को भन्म करने वाले रासुर गजासुर , अन्धकासुर के सहारक , दक्षपज्ञविध्वसंक तथा स्वयं यमराज के लिए भी यमस्वरूप है , मैं उन शिव जी को भजता हूँ । 1 जय - द - विध - ग - मदभुज द्विनिर्गमत्क्रम- स्फुरत्करात - भात - हव्यवाद

चिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गभङ्गत पनि क्रम - प्रवर्तित प्रचण्डताण्ड कि १ ९ . अतयंत वेग से भ्रमण कर रहे सर्पों के फूफकार से क्रमश : ततट में बढ़ी हुई प्रचंण अफ्रि के मध्य मृदंग की मंगलकारी उच्च चिम - चिम की ध्वनि के साथ ताण्डव नृत्य में लीन शिव जी सर्व प्रकार सुशोभित हो रहे हैं । एम - द्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्ति - कमजोर - गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः तृष्णारविन्द - चक्षुष प्रजा - मही महेन्द्रयोः समप्रवृतिकः कदा सदाशिव भजे १२ . । कठोर पत्थर एवं कोमल शव्या , सर्प एवं मोतियों की मालाओं , बहुमूल्य रत्न एवं मिट्टी के टुकडों , शत्रू एवं मित्रों , राजाओं तथा प्रजाओं , तिनको तथा कमलों पर सामान दृष्टि रखने वाले शिव को मैं भजता है । कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्त - दुमतिः सदा शिरःस्थ 1 मञ्जलिं वहन् विमुक्तलोललोचनो ललामभाललप्रकः शिवेति मंत्र - गुब्बरन् कदा सुखी भवाम्यहम् १३ . कब में गंगा जी के कछारगुन में निवास करता हुआ, निष्कपट हो , सिर पर अंजली धारण कर चंचल नेत्रों तथा तलाट वाले शिव जी का मंत्रोच्चार करते हुए अक्षय सुख को प्राप्त करूंगा । निलिम्प नाधनागरी कदम्ब मौसमल्लिका- निगुम्फनिर्भक्ष पूष्णिकामनोहर । तनोतु नो मनोमूद विनोदिनींमहनिश परिश्रय परं पदं तदंगजत्विषां चयः

प्रचण्ड वाडवानत प्रभाशुभप्रचारणी महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना । विमुक्त वाम लोचनो विवाहकातिकचनिः शिवेति मन्तभूषगो जगजाय जायताम् ॥१५ ॥ इदम् हि नित्य

YASHVRIDDHI

- मेव - मुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति संततम् . हरे गुरो सुभक्तिमा शुपातिना न्यथा गति विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् १६ ... इस उत्तमोत्तम शिव ताण्डव स्त्रोत को नित्य पढ़ने या श्रवण करने मात्र से प्राणि पवित्र हो , परंगुरू शिव में स्थापित हो जाता है तथा सभी प्रकार के धमों से मुक्त हो जाता है । पूजावसानसमये दशवकलगीतं यः शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे [स्य स्थितं रथ गजेन्द्र तुरङ्ग युक्तां लक्ष्मी सदेवसुमुखि प्रददाति शंभुः १७ . - प्रात : शिवपुजन के अंत में इस रावणकृत शिवताण्डवस्तोत्र के गान से लक्ष्मी स्थिर रहती है तथा भक्त रथ, गज, घोडा आदि सम्पदा से सर्वदा युक्त रहता है ।

इस पुस्तक में हमने पारद निर्माण की विधि को संक्षेप में वर्णन किया है। अगर किसी प्रकार की त्रुटि होती है तो इसके लिए हम आपसे क्षमा प्रार्थी हैं। कृपया किस पाई जाने वाली किसी त्रुटि के लिए आप हमें संबोधित कर सकते हैं। और इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए आप दिए गए लिंक पर क्लिक कर सकते हैं और इस पुस्तक को प्राप्त कर सकते हैं और अगर आपको प्रतीत होता है कि आप के लिए आवश्यक है और सराहनीय है तो कृपया इसकी सराहना करें और अपने सभी प्रिय जनों से इस को साझा करें। आपसे बात करके बहुत ही प्रसन्नता हुई।

हर हर महादेव!

YASHVRIDDHI